UGC APPROVED

ISSN : 2394-3580

VOLUME - 4 NOV. 2017

# Swadeshi Research Foundation

# A MONTHLY JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH

Referred & Review Journal

Indexing & Impact Factor - 2.9

Published by :

Swadeshi Research Foundation & Publication

Seva Path, 320 Sanjeevani Nagar,

Veer Sawarkar Ward, Garha, Jabalpur (M.P.) - 482003

ISSN : 2394-3580

IN Hindi & English

# SWADESHI RESEARCH FOUNDATION

## Peer Review & Referred Journal

## A Monthly Journal of Multidisciplinary Research

## Honorable Member of Advisory & Editorial Board

| Name | Subject / Department | University / College |
|---|---|---|
| Dr. Ashwani Mahajan | Department of Economic | Delhi University |
| Prof. A.D.N. Bajpai | Department of Economics | Vice Chancellor, H.P. University, Shimla |
| Prof. Vijay Parihar | Department of Economics | M.G.C.V. Chitrakoot |
| Prof. Khem Singh Daheriya | Department of Hindi | Amarkantak University |
| Dr. Niti Jain | Department of Economics | Amarkantak University |
| Dr.Tapan Choure | School of studies in Economics | Vikram University Ujjain |
| Prof. Dr. N.G. Pendse | Department of Economic | R.D.V.V. Jabalpur (M.P.) |
| Prof. Dr. S.N. Mishra | Department of Ancient Indian History & Archaeology | R.D.V.V. Jabalpur (M.P.) |
| Prof. Dr. T.N. Shukla | Department of Hindi | R.D.V.V. Jabalpur (M.P.) |
| Prof. Dr. Ram Shankar | Department of Political Science | R.D.V.V. Jabalpur (M.P.) |
| Dr. Mritunjay Kumar Singh | Department of Economic | R.D. Govt. P.G. College Mandla |
| Dr. Alkesh Chaturvedi | Department of History | Govt. Mahakaushal College Jabalpur (M.P.) |
| Dr. Amarjeet Kaur Gill | Department of adult Education | R.D.V.V. Jabalpur (M.P.) |
| Dr.NeetaTapan Choure | Department of Economic | Govt.Girls College Ujjain |
| Dr. Nipun Silawat | Microbiology | Principal Sciencetist MPCOST |
| Dr. Dhurv Kumar Dixit | Department Sociology | Kesharwani College |
| Dr. Narendra Kumar Kosti | Department of Economics | Govt. Mahakaushal College Jabalpur |
| Dr. Pradeep Trivedi | Department of Lib. & Information Science | M. Lib. Govt. Girls College Seoni |
| Dr. Sanjay Singh Chauhan | Deparment of Research | Swami Vivekanand University Sagar (M.P.) |
| Smt. Mona Gupta | Department of English | Govt. Arts College Panagar |
| Dr. Sunil Sharma | LLB, LLM, PhD-Law | Law Department R.D.V.V. Jabalpur |
| Dr. Kirti Vishwakarma | M.B.B.S., M.S. | Bangalore |
| Dr. Shailendra Basedia | Commerce & Management | Global Eng & Management |
| Dr. Asha Rani | Department of Hindi | R.D.V.V. Jabalpur (M.P.) |
| Dr. Ravesh Tamana Tajeeri | Department of Sanskrit | R.D.V.V. Jabalpur (M.P.) |
| Dr. Pravesh Pandey | Department of Political Science | R.D.V.V. Jabalpur (M.P.) |
| Dr. Akhilesh Jain | M.Com , F.C.A. , LLB | C.A. |
| Dr. Abhay Singh | Department Ancient History | R.D.V.V Jabalpur |
| Dr. Yogendra Payasi | Life Science | Atalbihari Vajpayee Hindi university |
| Dr.Anil Sumitra | Media & Mass Communication | Atalbihari Vajpayee Hindi university |
| Om Prakash Parmar | Management | Atalbihari Vajpayee Hindi university |

## Editor

*Dr. Devendra Vishwakarma*

**B.Com., M.A. (ECo. Rural Development), M.B.A., M.S.W., L.Lb.**
**Asstt. Prof. Eco. Vikramaditya College, Jabalpur (M.P.)**
**320, Sanjeevani Nagar, Garha, Jabalpur (M.P.)**

| S.No. | Paper Title | Author Name | Page No. |
|---|---|---|---|
| 1. | Study of Nutritional Awareness amongst College girls with reference to frequency of Junk Food Consumption | Bhavna Tripathi<br>Dr Rajlakshmi Tripathi | 1–8 |
| 2. | राजी सेठ के कथा साहित्य में सम्बधों की संवदेना | नन्दिनी साहू | 9–12 |
| 3. | IMPACT OF PRICING STRATEGIES ON PATIENTS SATISFACION IN RURAL AREA | Dr. Priti Singh<br>Shikha Kumrawat | 13–17 |
| 4. | ग्रामीण महिलाओं का आर्थिक जीवन स्तर में सरकारी योजनाओं की भूमिका : स्वास्थ्य के प्रति, (धार जिले के संदर्भ में) | कु. सपना पटेल<br>डॉ. शारदा शिन्दे | 18–25 |
| 5. | रोजगार सूचना प्राप्ति की विधियाँ एवं प्रसार | डॉ. विनीता पाण्डेय | 26–32 |
| 6. | ग्रामीण विकास में किसानों के संरक्षण हेतु बैंकिंग योजनाओं का सफल संचालन | डॉ. रमेश मंगल<br>विभा गोयल | 33–35 |
| 7. | छिंदवाड़ा में आदिवासियों का अंग्रेजों के विरूद्व संघर्ष में योगदान – एक ऐतिहासिक अध्ययन् | सुदेश कुमार मेहरोलिया | 36–40 |
| 8. | A DETAIL OF SOME OF THE IMPORTANT ANCIENT SCULPTUES OF KASHMIR | Tahira Khanam | 41–44 |
| 9. | Plant nutrients and insects development | Tahir Hussain Shah | 45–51 |
| 10. | रेल्वे में कार्यरत कर्मचारियों के व्यक्तित्व पर रेल्वे में कार्य वातावरण के प्रभावों का अध्ययन | डॉ. रंजना जैन | 52–54 |
| 11. | बेरोजगारी की समस्या के समाधान हेतु जिला उद्योग केन्द्र की भूमिका | डॉ. श्रृदधा कनौजिया | 55–59 |
| 12. | रागमाला चित्रण | मनीष कुमार कोष्टा | 60–62 |
| 13. | भारतीय कृषि में सार्वजनिक निवेश एवं पूंजी निर्माण | बलराम सेन | 63–70 |
| 14. | Sustainable Development is A Multidimensional Concept | Dr. Devendra Vishwakarma | 71–76 |
| 15. | FINANCIAL INCLUSION THROUGH RRBS: AN EMPIRICAL STUDY IN MADHYA PRADESH | Dr. Kalpana Sharma | 77–85 |
| 16. | Economic Reforms and Its impacts on Industrialization or Manufacturing | Showkat Ahamd Sheikh<br>Dr. Sharad Tiwari | 86–94 |
| 17. | DEVELOPMENT INDUCED DISPLACEMENT: HARRASMENT OF VULNERABLES | Ms. Priyanka Joshi | 95–102 |
| 18. | उशा प्रियंवदा के कथा – साहित्य में नारी की स्थिति | शशि उइके | 103–105 |

| | | | |
|---|---|---|---|
| 19. | बैगा जनजाति क्षेत्रों में जागरूकता, जन अभियान परिषद बैहर की सराहनीय पहल (बैहर तहसील के बैगा जनजाति क्षेत्रों के संदर्भ में) | रंजीत कुमार भालेकर | 106–109 |
| 20. | यशपाल के उपन्यासों का राजनीतिक परिदृश्य | तनुजा बन्सोड | 110–114 |
| 21. | डॉ. अम्बेडकर का भारतीय राजनीतिक क्षेत्र में योगदान | डॉ. जयश्री दीक्षित<br>करुणा मिश्रा | 115–116 |
| 22. | AGRICULTURE SECTOR IN INCLUSIVE GROWTH | Dr. Pramodini Vitthal Kadam | 117–122 |
| 23. | Social Responsibility of Management in Business | Dr. Songirkar Nitin Bhatu | 123–127 |
| 24. | AN ANALYTICAL STUDY RELATING TO THE ISSUES AND CONCERNS ON CHILD LABOUR IN INDIAN BUSINESS SECTOR | Deepali Rani Sahoo | 128–130 |
| 25. | A study of impact of Inflation on Multi Commodity Exchange Index: Indian Prospect | Ms. Herpreet Kaur<br>Dr. Jagdeep Singh | 131–135 |
| 26. | दलितों के साथ भेदभाव व अत्याचार : कौन जिम्मेदार? | अखिलेश कुमार जायसवाल | 136–141 |
| 27. | मध्यप्रदेश में डिण्डौरी जिले के झारिया समुदाय में अनुसूचित जाति पर अत्याचार | डॉ. (श्रीमती) प्रीती पाण्डे | 142–152 |
| 28. | पर्यटन विकास की समस्याएँ महत्व एवं विषय – वस्तु के चुनाव का अध्ययन | ज्योति तिवारी | 153–154 |
| 29. | Access to Microfinance in Odisha A study with special reference to eradication of poverty | S.R. SATPATHY | 155–169 |
| 30. | चमत्कारी फसल सोयाबीन : विश्व एवं भारत के परिदृश्य में | डॉ. वनश्री मेहता | 170–181 |
| 31. | भारतीय इस्पात (स्टील) उद्योग में निजी एवं सार्वजनिक क्षेत्र के योगदान का विश्लेषणात्मक अध्ययन | डॉ. मंजू सिंह | 182–185 |
| 32. | मन्दसौर की सन्धि (06 जनवरी ई. 1818) और और होलकर राज्य पर अंग्रेजो का प्रभाव | Dr. Pankaj Malviya | 186–188 |
| 33. | सर सिरेमल बापना और इन्दौर की नवीन वाटर सप्लाय योजना यशवन्त सागर बांध (गंभीर जल योजना) योजना | डॉ. उषा देवड़ा | 189–190 |
| 34. | किशोरावस्था की छात्राओं की समस्याओं पर पारिवारिक वातावरण के प्रभाव का अध्ययन | स्वाती पाठक<br>डॉ. ममता बाकलीवाल | 191–194 |
| 35. | MARKETING IN 21$^{ST}$ CENTURY: THE NINE 'Ps' OF MARKETING MIX | Narita Ahuja | 195–200 |

ISSN : 2394-3580 Swadeshi Research Foundation Nov. 2017
A Monthly Journal of Multidisciplinary Research (UGC APPROVED, Peer Reviewed & Refereed Research Journal)

# चमत्कारी फसल सोयाबीनः विश्व एवं भारत के परिदृश्य में

डॉ. वनश्री मेहता
अतिथि व्याख्याता, डी.एन. जैन महाविद्यालय जबलपुर

शोध सार :–40 प्रतिशत प्रोटीन से भरपूर एवं 20 प्रतिशत तेल युक्त चमत्कारी फसल जिसे सोयाबीन के नाम से जाना जाता है, को वैज्ञानिक नाम "ग्लाईसिन मैक्स" से जाना जाता है। सोयाबीन सर्वाधिक प्रोटीन युक्त एवं अन्य फसलों की अपेक्षा सर्वाधिक तेल प्रदान करने वाली उत्तम गुणवत्ता से युक्त फसल है। यह फसल प्राचीनतम फसलों में से एक है। वर्तमान में सोयाबीन एवं इसके बने उत्पादों ने एशियन देशों की खाद्य आदतों में एक महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त कर लिया है। वर्ष 1900 के आस–पास एशिया में ही सोया एक खाद्य फसल के रूप में जाना जाता था, किन्तु वर्तमान में यह पूरे विश्व में फैल चुका है। वैश्विक स्तर पर सोयाबीन का तेल के अतिरिक्त अन्य रूप में सीधा उपयोग दिन–प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है क्योंकि यह पोषण, स्वास्थ्य एवं आर्थिक रूप से लाभदायक है। बढ़ती हुई लोकप्रियता को देखते हुये सोयाबीन के प्रसंस्करण एवं विपणन आदि हेतु भविष्य में छोटी सोयाबीन प्रसंस्करण इकाईयॉं इसके प्रवर्तन एवं उपभोग में महत्वपूर्ण कार्य करेंगी। विश्व भर में स्वास्थ्य एवं अर्थव्यवस्था की दृष्टि से सोयाबीन एक महत्वपूर्ण फसल मानी जा रही है जिसमें भरपूर पौष्टिकता होने के कारण इसके उपभोग में लगातार वृद्धि हो रही है। वर्तमान में भारत में भी तेल के अतिरिक्त अन्य सोयाबीन उत्पाद बनाये जा रहें है, जिनका रोजमर्रा के कार्यों में उयोग किया जा रहा है। विश्व में महत्वपूर्ण 5 सोयाबीन उत्पादक देश संयुक्त राष्ट्र अमेरिका, ब्राजील, अर्जेन्टीना, चीन एवं भारत है, जिसमं भारत पॉचवें स्थान पर है। विश्व में सर्वाधिक सोयाबीन लगभग 31% संयुक्त राष्ट्र अमेरिका में उत्पादित हो रहा है जबकि भारत में विश्व का लगभग 4.5% सोयाबीन उत्पादन होता है। भारत में सोयाबीन के उत्पादन एवं उत्पादिता में वर्ष दर वर्ष वृद्धि हो रही है। वर्ष 2012–13 में भारत में 10.84 मिलियन हैक्टेयर पर 14.67 मिलियन टन सोयाबीन का उत्पादन किया गया है तथा प्रति हैक्टेयर उत्पादिता बढ़कर 1353 किग्रा हो गई। यद्यपि विश्व के अन्य प्रमुख सोयाबीन उत्पादक देशों की तुलना में प्रति हैक्टेयर पैदावार कम है तथापि विगत वर्षों में इसमें वृद्धि दिखाई दे रही है। सोयाबीन अनुसंधान केन्द्र के एक अनुमान के अनुसार वर्ष 2020 तक भारत में सोयाबीन का उत्पादन 12 मिट्रिक हैक्टयर क्षत्र में 20 मिट्रिक टन हो जायगा। किन्तु यह अनुमान इसके घरेलू उपभोग, खाद्य एवं औद्योगिक उपकरणों पर निर्भर है।

वैश्विक स्तर पर सोयाबीन की स्थिति :–वैश्विक स्तर पर सोयाबीन के उत्पादन में विगत् तीन दशकों से लगातार वृद्धि दिखाई दे रही है। वर्ष 1980–81 में सोयाबीन का कुल वैश्विक उत्पादन जहॉं 62.2 मिलियन टन था वहीं वर्ष 2012–13 में यह बढ़कर लगभग 267.85 मिलियन टन हो गया। विश्व में सोयाबीन का उत्पादन संयुक्त राष्ट्र अमेरिका, ब्राजील, अर्जेन्टीना, चीन, भारत, पैरागुए, कनाडा आदि देशों में होता है। विश्व का सर्वाधिक सोयाबीन उत्पादन संयुक्त राष्ट्र अमेरिका में होता है। जिसे तालिका क्रमांक 1 से स्पष्टतः जाना जा सकता है।

तालिका क्र. 1
विश्व में सर्वाधिक सोयाबीन उत्पादन (मिलियन टन में)

| देश का नाम | 2005-06 | 2006-07 | 2007-08 | 2008-09 | 2009-10 | 2010-11 | 2011-12 | 2012-13 |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| संयुक्त राष्ट्र अमेरिका | 83.5 | 87.0 | 72.98 | 80.7 | 94.7 | 90.66 | 84.66 | 82.79 |

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ब्राजील | 57.0 | 59.0 | 61.0 | 57.0 | 69.00 | 75.3 | 66.5 | 82.00 |
| अर्जेन्टीना | 40.5 | 48.8 | 46.2 | 32.0 | 54.50 | 49.00 | 40.10 | 49.30 |
| चीन | 16.4 | 16.0 | 14.0 | 15.5 | 14.98 | 15.08 | 14.48 | 13.05 |
| भारत | 7.0 | 7.7 | 9.5 | 9.1 | 9.71 | 10.13 | 11.94 | 12.18 |
| पैरागुए | 3.6 | 5.9 | 6.9 | 3.9 | 6.46 | 7.13 | 4.04 | 8.20 |
| कनाडा | 3.2 | 3.5 | 2.7 | 3.3 | 0.12 | 0.17 | 0.21 | 0.24 |
| अन्य | 9.5 | 9.3 | 8.0 | 9.1 | 0.78 | 6.53 | 17.6 | 20.09 |
| योग | **220.7** | **237.1** | **221.1** | **210.6** | **250.25** | **254.00** | **239.53** | **267.85** |

स्त्रोत :fas.usda.gov. (Website of United State of America Agriculture Department)

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि सोयाबीन के वैश्विक उत्पादन में लगातार वृद्धि हो रही है। सर्वाधिक उत्पादन संयुक्त राष्ट्र अमेरिका में हो रहा है किन्तु सत्र 2012–13 में ब्राजील एवं अमेरिका में बहुत अधिक अंतर नहीं है। विश्व के कुल उत्पादन में लगभग 30.90% उत्पादन संयुक्त राष्ट्र अमेरिका में होता है, जबकि ब्राजील में 30.61% .उत्पादन हुआ। इसी प्रकार अर्जेन्टीना भी सोयाबीन उत्पादन में लगातार तृतीय स्थान पर हैं। वहीं चीन में वर्ष 2012–13 में उत्पादन में गिरावट दिखाई दे रही है किन्तु भारत में क्रमशः वृद्धि हो रही तथा यह पॉचवें स्थान पर है।विश्व में कुल सायेाबीन उत्पादन में 3 वृहत् उत्पादक देश यथा संयुक्त राष्ट्र अमेरिका, ब्राजील एवं अर्जेन्टीना का सर्वाधिक भाग है अर्थात् कुल उत्पादन का लगभग 80% उत्पादन इन 3 देशों मे होता है। इन तीनो में से सर्वाधिक उत्पादन संयुक्त राष्ट्र अमेरिका में होता है जो कुल उत्पादन का लगभग एक तिहाई है। विश्व में सोयाबीन के उत्पादन का प्रतिशत तालिका क्रमांक 2में दर्शाया गया है।

तालिका क्र. 2
वैश्विक स्तर पर सोयाबीन उत्पादक देशों का प्रतिशत (2012–13)

| देश | प्रतिशत |
|---|---|
| संयुक्त राष्ट्र अमेरिका | 30.90% |
| ब्राजील | 30.61% |
| अर्जेन्टीना | 18.04% |
| चीन | 4.87% |
| भारत | 4.54% |

जहॉ तक वैश्विक स्तर पर सोयाबीन के कुल क्षेत्रफल एवं उत्पादन पर ध्यान दें तो इसमें विगत् 13 वर्षो में लगातार वृद्धि हो रही है जिसे तालिका क्रमांक 3 क्रमांक में दर्शाया गया है। तालिका से स्पष्ट है कि वर्ष 2001–02 में सोयाबीन का वैश्विक क्षेत्रफल 79.47 मिलियन हैक्टेयर था वह वर्ष 2012–13 तक बढ़कर 119.03 मिलियन हैक्टेयर हो गया। इसी प्रकार वर्ष 2001–02 में उत्पादन जहॉ 184.82 मिलियन टन था वहीं यह वर्ष 2012–13 में बढ़कर 267.85 मिलियन टन के लगभग हो गया अर्थात् इसमें लगभग 83 मिलियन टन की वृद्धि दृष्टव्य है।

तालिका क्र. 3
वैश्विक स्तर पर सोयाबीन क्षेत्रफल एवं उत्पादन

| वर्ष | क्षेत्रफल (मिलियन हैक्टेयर) | उत्पादन (मिलियन टन) |
|---|---|---|
| 2001-02 | 79.47 | 184.82 |
| 2002-03 | 82.31 | 196.87 |
| 2003-04 | 88.41 | 186.64 |
| 2004-05 | 93.18 | 215.78 |
| 2005-06 | 92.92 | 220.67 |
| 2006-07 | 94.24 | 237.11 |
| 2007-08 | 90.72 | 221.13 |
| 2008-09 | 96.18 | 210.64 |
| 2009-10 | 111.00 | 250.25 |
| 2010-11 | 112.76 | 254.00 |
| 2011-12 | 114.69 | 239.53 |
| 2012-13 | 119.03 | 267.85 |

स्त्रोत : fas.usda.gov. (Website of United State of America Agriculture Department)

विश्व में सोयाबीन के उत्पादन के साथ–साथ प्रति हक्टेयर उत्पादकता में भी वृद्धि हो रही है जिसे तालिका क्रमांक 4 से समझा जा सकता है। वर्ष 2012–13 में लगभग 119 मिलियन हैक्टेयर पर 267.85 मिलियन टन सोयाबीन उत्पादन किया गया अर्थात् प्रति हैक्टेयर लगभग 2250 किलोग्राम सोयाबीन का उत्पादन किया गया।

तालिका क्र. 4
वैश्विक स्तर पर सोयाबीन की उत्पादिता(किग्रा प्रति हैक्टेयर)

| वर्ष | उत्पादकता |
|---|---|
| 2001-02 | 2325.6 |
| 2002-03 | 2391.8 |
| 2003-04 | 2111.1 |
| 2004-05 | 2315.7 |
| 2005-06 | 2374.8 |
| 2006-07 | 2516.0 |
| 2007-08 | 2437.5 |
| 2008-09 | 2190.0 |
| 2009-10 | 2255.2 |
| 2010-11 | 2252.5 |
| 2011-12 | 2088.4 |
| 2012-13 | 2250.2 |

स्त्रोत : fas.usda.gov.

विश्व में सोयाबीन का विपणन बाजार :–पिछले दशक में सोयाबीन के वैश्विक अर्थव्यवस्था में एक महत्वपूर्ण बदलाव आया है। नवीन तकनीकों के उद्भव से राष्ट्रीय एवं अंतराष्ट्रीय पॉलिसी के कारण मांग में वृद्धि हो रही है। इस प्रक्रिया में दक्षिण एवं उत्तरी अमेरिका विश्व का सबसे बड़ा सोयाबीन उत्पादक एवं पूर्तिकर्ता राष्ट्र बनकर उभरा है। नई तकनीक एवं वैश्विक मांग में वृद्धि के फलस्वरूप सोयाबीन के उत्पादन, प्रसंस्करण, भण्डारण, कटाई, एवं विपणन व्यवस्था में बदलाव आया है। जिसके परिणामस्वरूप कई छोटे देश भी सायाबीन के उत्पादन में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। सोयाबीन के उच्च मूल्य प्रतिस्पर्धा, उच्च स्तरीय बाजार एवं अन्य निजी सेक्टर के बाजार में आने से अन्य प्रतिस्पर्धी तिलहनों (पॉम ऑइल आदि) में दबाव उत्पन्न होने लगा है तथा नवीन तकनीकों के अविष्कार के अवसर उत्पन्न होने लगे हैं। वैश्विक बाजार में प्रतिस्पर्धा बढ़ने से एशिया के कई छोटे देशों में सोयाबीन के वाणिज्यिक उत्पादन में कठिनाई उत्पन्न होने लगी है। बाजार में प्रतिस्पर्धा बढ़ने के कारण मूल्यों में कमी हुई है तथा छोटे देशों को हानि उठाना पड़ रही है। जहां तक सोयाबीन के वैश्विक मूल्य का प्रश्न है तो उत्तर पश्चिमी यूरोप मुख्यतः रोटरडम से सोयाबीन, सोया खली एवं सोया तेल के आयात मूल्य तय होते है। विगत् 2 दशकों में सोयाबीन के अंतर्राष्ट्रीय मूल्यों में उतार चढ़ाव जारी रहे। किन्तु वैश्विक स्तर पर अन्य तिलहनों की अपेक्षा सोयाबीन का भविष्य उज्जवल दिखाई देता है। शिकागो बोर्ड ऑफ ट्रेड ने सायोबीन एवं

इसके उत्पादों को भविष्य का महत्वपूर्ण वैश्विक बाजार बताया है।

सोया खली एवं सोया तेल–वैश्विक मांग एवं आपूर्ति :–

सोया खली :–सोया मील या खली सोयाबीन फली का एक महत्वपूर्ण खाद्य उत्पाद है जिसकी विश्व बाजार में बहुत अधिक मांग है। वर्ष 2007–08 में सोया खली का कुल वैश्विक निर्यात 55.78 मिलियन टन था जो दशक का सर्वाधिक लगभग 10 मिलियन टन से भी अधिक रहा। 2010–11 एवं 2011–12 में से सोयाबीन खली का अंतिम स्टॉक मे कुछ वृद्धि दिखाई दे रही है तथापि विगत् कई वर्षो में यह कम हो रही है अर्थात् यह संकेत है कि विश्व बाजार में सोया खली की मांग बहुत अधिक बढ़ गई है। वर्ष 2009–10 में प्रारंभिक स्टॉक 4.44 मिलियन टन रहा जो दशक का सबसे कम स्टॉक था। सोया खली का घरेल् उपभोग वर्ष 2009–10 में 157.63 मिलियन टन था, जो विगत वर्षो मे लगातार बढ़ रहा है। सत्र 2010–11 से 2011–12 तक के आंकड़ों पर ध्यान दे तो ज्ञात होता है उत्पादन में वृद्धि होने के कारण आयात में कमी आयी है तथा निर्यात बढ़ा है यही कारण है कि अंतिम स्टॉक में कुछ वृद्धि दिखाई दे रही है। तथापि वर्ष 2012–13 में मांग बढ़ी है तथा घरेलू उपभोग 180.81 मि.टन तक पहुँच गया इसे तालिका क्रमांक 5 से समझा जा सकता है जिससे स्पष्ट है कि सोयाबीन खली की मांग मे निरंतर वृद्धि जारी है जो अच्छा संकेत है।

सोयाबीन तेल :–सोयाबोन खली के साथ ही सोयाबीन तेल सोयाबीन का महत्वपूर्ण उत्पाद है जो खाद्य तेल के रूप में उपयोग किया जाता है। सोयाबीन तेल का उपयोग वृहत रूप से विकासशील देशों में किया जाता है। सोया तेल के उत्पादन में विगत एक दशक वर्ष 2001 से 2013 तक लगभग 14 मिलियन टन की वृद्धि हुई तथा विगत् 3 वर्षो में यह सर्वाधिक हुई। 2007–08 से 2009–10 तक 4 वर्षो में सोयाबीन तेल के अंतिम स्टॉक में लगातार कमी दिखाई दे रही है तथा वर्ष 2009–10 में यह सर्वाधिक लगभग 2.21 मिलियन टन दर्ज की गई है किन्तु विगत् 3 वर्षो में इसमें कुछ वृद्धि हो रही है जिसका कारण उत्पान में वृद्धि है। सोयाबीन तेल के घरेलु उपभोग में भी वृद्धि जारी है तथा वर्ष 2012–13 में यह लगभग 43.62 मिलियन टन रही जिसका विस्तृत विवरण तालिका क्रमांक 6 में दर्शाया गया है। जिससे स्पष्ट है कि सोयाबीन के तेल के उत्पादन एवं घरेलू उपभोग की मांग बराबर बनी हुई है।

तालिका क्र. 5
विश्व में सोया खली की मांग एवं आपूर्ति (मिलियन टन में)

| वर्ष | प्रारंभिक स्टॉक | उत्पादन | आयात | निर्यात | घरेलू उपभोग | अंतिम स्टॉक |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 2001-02 | 5.70 | 125.07 | 40.70 | 41.6 | 123.62 | 5.85 |
| 2002-03 | 5.85 | 130.65 | 42.47 | 42.78 | 130.16 | 6.03 |
| 2003-04 | 6.03 | 128.85 | 44.89 | 45.42 | 128.97 | 5.96 |
| 2004-05 | 5.96 | 139.07 | 45.92 | 47.68 | 136.69 | 6.57 |
| 2005-06 | 6.57 | 145.82 | 51.16 | 51.78 | 145.54 | 6.23 |
| 2006-07 | 6.23 | 153.94 | 52.60 | 53.99 | 152.26 | 6.52 |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 2007-08 | 6.52 | 158.52 | 54.32 | 55.78 | 157.47 | 6.11 |
| 2008-09 | 6.11 | 150.94 | 51.63 | 52.37 | 151.87 | 4.44 |
| 2009-10 | 4.44 | 158.41 | 54.01 | 54.86 | 157.63 | 4.37 |
| 2010-11 | 6.67 | 174.54 | 56.48 | 58.54 | 170.26 | 8.89 |
| 2011-12 | 8.89 | 179.37 | 57.39 | 58.65 | 177.23 | 9.99 |
| 2012-13* | 9.99 | 182.38 | 58.25 | 60.32 | 180.81 | 9.56 |

स्त्रोत : fas.usda.gov. (*वर्ष 2012–13 के WASDE द्वारा 11 जनवरी 2013 को जारी रिपोर्ट से)

तालिका क्र. 6

विश्व में सोया तेल की मांग एवं आपूर्ति (मिलियन टन में)

| वर्ष | प्रारंभिक स्टॉक | उत्पादन | आयात | निर्यात | घरेलू उपभोग | अंतिम स्टॉक |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 2001-02 | 3.13 | 28.9 | 7.67 | 8.35 | 28.24 | 3.12 |
| 2002-03 | 3.12 | 30.58 | 8.27 | 9.03 | 30.16 | 2.77 |
| 2003-04 | 2.77 | 30.25 | 8.39 | 8.79 | 30.10 | 2.52 |
| 2004-05 | 2.52 | 32.63 | 8.88 | 9.17 | 31.69 | 3.18 |
| 2005-06 | 3.18 | 34.62 | 9.09 | 9.84 | 33.58 | 3.45 |
| 2006-07 | 3.45 | 36.36 | 9.88 | 10.54 | 35.78 | 3.34 |
| 2007-08 | 3.34 | 37.55 | 10.40 | 10.87 | 37.60 | 2.82 |
| 2008-09 | 2.84 | 35.63 | 8.93 | 9.12 | 35.78 | 2.48 |
| 2009-10 | 2.48 | 37.33 | 9.18 | 9.59 | 37.20 | 2.21 |
| 2010-11 | 3.27 | 41.29 | 9.24 | 9.53 | 40.76 | 3.52 |
| 2011-12 | 3.52 | 42.40 | 8.19 | 8.51 | 41.77 | 3.82 |
| 2012-13* | 3.82 | 43.18 | 8.41 | 8.78 | 43.62 | 3.00 |

स्त्रोत : fas.usda.gov. (*वर्ष 2012–13 के WASDE द्वारा 11 जनवरी 2013 को जारी रिपोर्ट से)

भारतीय परिदृश्य में सोयाबीन :– भारत में तिलहनी फसलों में प्रमुख रूप से मूंगफली, सूर्यमुखी, राई–सरसों, लिनसिड, रैपसीड, अलसी, सैफ्लावर एवं सोयाबीन कुल 9 तिलहनी फसलों का उत्पादन किया जाता है। उक्त सभी तिलहनी फसलों के कुल उत्पादन में सर्वाधिक उत्पादन सोयाबीन का होता ह। संचालनालय सांख्यिकीय एवं अर्थशास्त्र कृषि विभाग की सांख्यिकीय रिपोर्ट 2015 में तिलहनों के उत्पादन हेतु दिये गये आंकड़ों में वर्ष 2000–01 में जहॉ कुल तिलहनी फसलों का उत्पादन 18.44 मिलियन टन था जिसमें सोयाबीन का उत्पादन 5.28 मिलियन टन था, वहीं वर्ष 2013–14 के अंत तक कुल तिलहनी फसलों का उत्पादन 32.75 मिलियन टन में सोयाबीन का उत्पादन 11.86 मिलियन टन रहा। अर्थात् देश के कुल उत्पादन में वर्ष 2000–01 में यह लगभग 29% एवं वर्ष 2013–14 में लगभग 36% रहा। तिलहनी फसलों की घरेलू खपत बहुत अधिक होने के कारण मांग में लगातार वृद्धि जारी है तथा खाद्य तेल की कमी की पूर्ति हेतु तेल आयात करना पड़ता है। भारत में सोयाबीन उत्पादन में विगत लगभग 2.3 दशकों से वृद्धि जारी है, वर्ष 1991–92 में जहॉ 3ण्18 मिलियन हैक्टेयर भूमि पर 2.49 मिलियन टन सोयाबीन का उत्पादन किया गया वहीं वर्ष 2013–14 में यह बढ़कर 11.72 मिलियन हैक्टेयर पर 11.86 मिलियन टन हो गया। भारत में प्रमुख रूप से उत्पादित 9 तिलहनों के क्षेत्रफल, उत्पादन एवं उत्पादिता का विवरण तालिका क्र.7 दर्शाया गया है।

तालिका द्वारा भारत में उत्पादित कुल 9 तिलहनी फसलों का ट्रेंड पता चलता है वर्ष 2007–08 तक क्षेत्रफल एवं उत्पादन में वृद्धि निरंतर हुई तत्पश्चात् वर्ष 2008–09 एवं 2009–10 में यह क्रमशः कम हो रही है जबकि 2010–11 में पुनः वृद्धि दिखाई दी है, वर्तमान में तिलहन उत्पादन हमारी वर्तमान आवश्यकताओं से बहुत कम है। तिलहनों का कुल उत्पादन से मांग अधिक होने के कारण तिलहन कम पड़ जाता है तथा उक्त 9 तिलहनों में सर्वाधिक उत्पादन सोयाबीन का होता है। सोयाबीन के उत्पादन हेतु भारत वर्ष की जलवायु अनुकूल है तथा भारत में मुख्यतः मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, राजस्थान, आंध्रप्रदेश, कर्नाटक एवं अन्य प्रदेशों छत्तीसगढ़ आदि में सोयाबीन का उत्पादन होता है। देश का सर्वाधिक सोयाबीन उत्पादन मध्यप्रदेश में होता है। सोयाबीन उत्पादन में सदी के आठवें दशक से ही मध्यप्रदेश का नाम अग्रणी है। विगत् लगभग 20 वर्षों से भारत में सोयाबीन के क्षेत्रफल एवं उत्पादन में लगातार वृद्धि दिखाई दे रही है तथा वैज्ञानिक इसकी उत्पादिता बढ़ाने में भी लगातार प्रयासरत् है तथा सिंचित क्षेत्रफल के प्रतिशत में भी वृद्धि दिखाई दे रही है।

तालिका क्र. 7
भारत में उत्पादित 9 तिलहनी फसलों का उत्पादन/क्षेत्रफल/उत्पादिता

| वर्ष | क्षेत्रफल (मिलि. है.) | उत्पादन (मिलि. टन) | उत्पादिता (कि. ग्रा./है.) | सिंचित क्षेत्रफल का प्रतिशत : |
|---|---|---|---|---|
| 2001-02 | 22.77 | 18.44 | 810 | 23.0 |
| 2001-02 | 22.64 | 20.66 | 913 | 24.3 |
| 2002-03 | 21.49 | 14.84 | 691 | 22.7 |
| 2003-04 | 23.66 | 25.19 | 1064 | 24.5 |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 2004-05 | 27.52 | 24.35 | 885 | 26.6 |
| 2005-06 | 27.86 | 27.98 | 1004 | 28.0 |
| 2006-07 | 26.51 | 24.29 | 916 | 28.3 |
| 2007-08 | 26.69 | 29.76 | 1115 | 27.1 |
| 2008-09 | 27.56 | 27.72 | 1006 | 27.1 |
| 2009-10 | 25.96 | 24.88 | 959 | 25.9 |
| 2010-11 | 27.22 | 32.48 | 1193 | 25.1 |
| 2011-12 | 26.31 | 29.80 | 1133 | 27.6 |
| 2012-13 | 26.48 | 30.94 | 1168 | 28.3 |
| 2013-14 | 28.05 | 32.75 | 16168 | NA |

स्त्रोत : "All India Area, Productiona & Yield of Nine Oilseeds" Agriculture Statistics at a glance 2014, Govt. of India, Ministry of Agriculture, Directorate of Economics and Statistics, Pg. 94-95.

भारत वर्ष में वर्ष 2000–01 से 2013–14 के आंकड़ों (तालिका क्रमांक 8) पर दृष्टि डाले तो सोयाबीन के क्षेत्रफल एवं उत्पादन में थोड़े उतार–चढ़ाव के साथ बढ़ोतरी/वृद्धि का ट्रेंड दिखाई पड़ता है। वर्ष 2000–01 में जो उत्पादन 5.28 मिलियन टन था वह वर्ष 2007–08 में बढ़कर 10.97 मिलियन टन अर्थात् दुगुना हो गया किन्तु तत्पश्चात् विगत 2 वर्षों से सोयाबीन के उत्पादन में थोड़ा उतार चढ़ाव अवश्य दिखाई दे रहा है जिसका कारण भारतीय सोयाबीन के दाम ऊँचे होने के कारण निर्यात में कमी आना है तथा कृषकों का रूझान बुआई के प्रति कम होना है। वर्ष 2009–10 में अमेरिका में सोयाबीन का उत्पादन बहुत अधिक होने के कारण चीन का आयात अमेरिका से बढ़ता जा रहा है। भारतीय सोयाबीन के दाम ऊँचे होने के कारण निर्यात व्यापार में कमी आई है जिससे भारत का स्टॉक बढ़ता जा रहा है तथा एक ताजा रिपोर्ट के अनुसार स्टॉक बचे रहने से कृषकों को भारी नुकसान उठाना पड़ रहा है। अमेरिका में बंपर उत्पादन होने के कारण इस वर्ष सोया तेल की आपूर्ति ज्यादा हुई इसके चलते वर्ष 2013–14 में तेलों में खरीददार की तुलना में बिकवाल ज्यादा है। आयातित तेल के कम भावों के कारण उत्पादन अच्छा होने के बावजूद भी मिलों की खरीदी अपेक्षित नहीं है तथा तिलहनों का स्टॉक बढ़ने से उत्पादकों को नुकसान हो रहा है। तथापि भारतीय बाजार में सोयाबीन तेल की मॉग बराबर बनी हुई है।

तालिका क्र. 8
भारत सोयाबीन का क्षेत्रफल

| वर्ष | क्षेत्रफल (मिलि. है.) | उत्पादन (मिलि. टन) | उत्पादिता (कि.ग्रा./ है.) |
|---|---|---|---|
| 2001-02 | 6.42 | 5.28 | 822 |
| 2001-02 | 6.34 | 5.96 | 940 |
| 2002-03 | 6.11 | 4.65 | 762 |
| 2003-04 | 6.56 | 7.82 | 1193 |
| 2004-05 | 7.57 | 6.87 | 908 |
| 2005-06 | 7.71 | 8.27 | 1073 |
| 2006-07 | 8.33 | 8.85 | 1063 |
| 2007-08 | 8.88 | 10.97 | 1236 |
| 2008-09 | 9.51 | 9.91 | 1041 |
| 2009-10 | 9.73 | 9.96 | 1026 |
| 2010-11 | 9.60 | 12.74 | 1327 |
| 2011-12 | 10.11 | 12.21 | 1208 |
| 2012-13 | 10.84 | 14.67 | 1353 |
| 2013-14 | 11.72 | 11.86 | 1012 |

स्त्रोत : "All India Area, Productiona & Yield of Nine Oilseeds" Agriculture Statistics at a glance 2014, Govt. of India, Ministry of Agriculture, Directorate of Economics and Statistics,

भारतीय सोयाबीन की उत्पादिता वर्ष 2000–01 मे 1000 किग्रा/है. से भी कम थी जो वर्तमान में बढ़कर 1000–1100 किग्रा/है. के मध्य हो गई है किन्तु विश्व में उत्पादित सोयाबीन के मुकाबले यह बहुत कम है तथा इसे बढ़ाने के प्रयास निरंतर किये जा रहे हैं। भारत में उन्नत किस्म की पैदावार हेतु सरकार विगत कई वर्षों से प्रयासरत् है। भारतीय उत्पादित सोयाबीन की तुलना में अमेरिका, ब्राजील में उन्नत किस्म की सोयाबीन उत्पादित होती है। प्रति हैक्टेयर उत्पादकता भी विदेशी उत्पादन की तुलना में भारत में कम है। विश्व में सोयाबोन की प्रति हैक्टेयर पैदावार 2200 किग्रा/हैक्टेयर के बीच है जबकि भारत में यह मात्र 1000 किग्रा/हैक्टेयर के लगभग है जिसे बढ़ाना आवश्यक है ताकि बढ़ती हुई तेल की मांग की पूर्ति की जा सके।

भारत में सोयाबीन का विपणन बाजार :–कृषि विपणन के क्षेत्र में भारत में बहुत स निजी संस्थान एवं सहकारी विपणन संस्थान की सहायता से विपणन बाजार में बहुत अधिक सुधार आया है जिससे उत्पादक एवं कृषकों को अधिकाधिक लाभ प्राप्त हो सके। ये संस्थान उत्पादकों को न केवल विपणन कार्य में सहायता करती है वरन् उत्पादक को अधिकाधिक प्रतिफल प्राप्ति हेतु भी प्रयासरत् रहती है। जिसमें एफ.सी.आई. एवं सीएसीपी पूरे भारत में प्रबंधन में प्रमुख भूमिका का निर्वहन करते हैं। सीएसीपी या कमीशन आफन एग्रीकल्वर कॉस्ट एण्ड प्राइस का प्रमुख कार्य कृषि उपजों के लिये कृषकों के हित में शासकीय न्यूनतम मूल्य निर्धारण की सलाह देना है। अन्य फसलों के साथ सोयाबीन को भी वर्ष 1977–78 में सीएसीपी के अंतर्गत सम्मिलित कर दिया गया तथा अन्य सार्वजनिक संस्थानों में सोयाबीन का क्रय इसी वर्ष से सीएसीपी द्वारा निर्धारित दर पर किया जाना प्रारंभ हुआ। इन संस्थानों में फसलों का क्रय पसंस्करण एवं विपणन का कार्य किया जाता है। तिलहनी फसलों के क्रय, प्रसंस्करण एवं विपणन प्रक्रिया में नाफाड (नेशनल एग्रीकल्वर को–ऑपरेटिव मार्केटिंग फेडरेशन–नाफाड), नेशनल डेयरी डेवलपमेंटर बोर्ड (एनडीडीबी), कृषि विपणन बोर्ड, विशेष विपणन/प्रसंस्करण संस्थान आदि संस्थानों का महत्वपूर्ण योगदान है। एन.डी. डी.बी. का मुख्य कार्य डेयरी उद्योग को संस्थापित करना है किन्तु वर्ष 1980 के मध्य इसे तिलहनों की कुटाई, प्रसंस्करण तथा घरेलु मॉग की पूर्ति हेतु तेल के विपणन कार्य में भी सम्मिलित किया गया। उक्त के अतिरिक्त राज्य स्तरीय सहकारी संस्थानें भी तिलहनों के प्रसंस्करण एवं विपणन के कार्य में लगी हुई है जिसमें ऑइल फैड मध्यप्रदेश की प्रमुख संस्थान है। सोयाबीन की कुटाई एवं प्रसंस्करण कार्य में उक्त संस्थानो का महत्वपूर्ण योगदान है तथा इन संस्थानों में शासन द्वारा निर्धारित दरों पर सोयाबीन का विपणन कार्य होता है, जिससे उत्पादक को फसल का उचित मूल्य प्राप्त हो सके।

भारत में सोयाबीन तेल एवं खली का आयात/निर्यात :–भारत में सोयाबीन तेल की मॉग बहुत अधिक होने के कारण उत्पादित सोयाबीन का उपभोग घरेलू बाजार में ही हाता है तथा विदेशों से तेल आयात करना पड़ता है। भारत में मुख्यतः मध्य एवं दक्षिण राज्यों में सोयाबीन की पैदावार होती है। देश में मध्यप्रदेश एवं महाराष्ट्र सोयाबीन उत्पादन के सबसे बड़े उत्पादक राज्य है तथा कुल पैदावार का लगभग 90 प्रतिशत भाग इन्हीं दोनों प्रदेशों से प्राप्त होता है।

सोया खली के निर्यात में भारत विश्व के बड़े निर्यातक देशों में से एक है। वर्ष 2000–01 से 2008–09 के मध्य भारतीय सोया खली के निर्यात में लगभग दुगुनी वृद्धि हुई वर्ष 2000–01 में यह 2.37 मिलियन टन थी जो वर्ष 2008–09 में बढ़कर 4.25 मिलियन टन हो गई किन्तु 2008–09 से 2009–10 में इसमें कमी दिखाई दी जबकि 2010–11 से 2012–13 में सोयाबीन खली का निर्यात लगभग 4 मिलियन टन के आस–पास रहा किन्तु सत्र 2013–14 में यह 2.74 मिलियन टन तक पहुँच गया जिसे क्रमांक 9 में दर्शाया गया है। इसी पकार भारत खाद्य तेलों के आयात में भी सबसे बड़े आयातक देशों में से एक है जिसका सबसे बड़ा कारण घरेलु मॉगं की पूर्ति न कर पाना है। तालिका क्रमांक 9 में सोयाबीन तेल के आयात को भी दर्शाया गया है वर्ष 2001–02 में यह 1.479 मिलियन टन था जो वर्ष 2012–13 तक 2.799 मिलियन टन हो गया।

तालिका क्रमांक 9
भारत में सोया मील/खली का निर्यात

| भारत में सोया मील/खली का निर्यात | | भारत में सोया तेल का आयात | |
|---|---|---|---|
| वर्ष | निर्यात (मिलियन टन) | वर्ष | आयात (मिलियन टन) |
| 2000-01 | 2.37 | 2000-01 | 1.479 |
| 2001-02 | 2.80 | 2001-02 | 1.197 |

| | | | |
|---|---|---|---|
| 2002-03 | 1.49 | 2002-03 | 0.906 |
| 2003-04 | 2.64 | 2003-04 | 2.026 |
| 2004-05 | 1.97 | 2004-05 | 1.727 |
| 2005-06 | 4.27 | 2005-06 | 1.447 |
| 2006-07 | 4.14 | 2006-07 | 0.733 |
| 2007-08 | 5.28 | 2007-08 | 1.060 |
| 2008-09 | 3.81 | 2008-09 | 1.598 |
| 2009-10 | 3.12 | 2009-10 | 0.945 |
| 2010-11 | 4.80 | 2010-11 | 1.174 |
| 2011-12 | 4.40 | 2011-12 | 1.086 |
| 2012-13 | 4.35 | 2012-13 | 1.830 |
| 2013-14 | 2.74 | 2013-14 | 2.799 |

स्त्रोतः www.sopa.org.

सोयाबीन, तेल एवं खली का मूल्य विश्लेषण :–सोयाबीन एवं सोया तेल के मूल्य को प्रमुख रूप से वर्षा एवं मौसमी दशायें प्रभावित करती हैं। सोयाबीन खरीफ मौसम की प्रमुख फसल है तथा पर्याप्त वर्षा में इसका अच्छा उत्पादन होता है। वर्ष 2013–14 के विगत् कुछ माह में इसके मूल्य में मौसमी दशाओं का सीधा प्रभाव देखने को मिलता है। सोया तेल, सोयाबीन एवं सोया खली तीनों ही के मूल्य विगत वर्ष में लगातार बढ़ने प्रारंभ हुये जो माह नवंबर से बढ़ते हुये मई–जून के मध्य ऊँचाई पर पहुँच गये। माह सितम्बर से नवंबर के मध्य सोयाबीन की तेजी से आवक के कारण मूल्य कुछ कम रहे किन्तु माह मई से जुलाई में त्यौहारी मास के कारण मॉग में अचानक वृद्धि हो गई तथा इसी कारण मूल्य बहुत अधिक बढ़ गये।

वैसे तो सोया तेल एवं सोयाबीन के मूल्य में वर्ष 2001 से ही गति समान बनी हुई है तथापि तेल वर्ष 2013–14 में इसमें कुछ अस्थिरता दिखाई देती है। सितम्बर से फरवरी तक जहॉ मूल्य में अधिक अंतर नहीं था वहीं मार्च मार्च से मई–जून तक वृद्धि दिखाई देती है जो मई माह में सर्वाधिक रू. 4584/– तक पहुँच गई किन्तु सोया तेल इस तुलना में कम पड़ रहा है जिसका प्रमुख कारण सोया तेल का स्टॉक आयात द्वारा प्राप्त होना रहा। सरकार द्वारा आयातित शुल्क कम करने के कारण आयात में भारी वृद्धि हुई। अतः मूल्यों पर मासमी दशाओं एवं मॉग पूर्ति का सीधा प्रभाव देखने को मिला।

निष्कर्ष एवं सुझाव :– अतः निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि वर्तमान परिदृश्य में विश्व एवं भारत में सोयाबीन के क्षेत्राच्छादन, उत्पादन एवं उत्पादिता में लगातार वृद्धि हो रही है। विश्व का सर्वाधिक सोयाबीन उत्पादन संयुक्त राष्ट्र अमेरिका (लगभग 31%) में होता है तथा भारत का स्थान पॉचवा है जहॉ विश्व के संपूर्ण उत्पादन का लगभग 4% उत्पादन हो रहा है। वैश्विक स्तर पर सोयाबीन के विपणन एवं प्रसंस्करण में वृद्धि हो रही है तथा सोयाबीन का विपणन बाजार बढ़ने से अन्य तिलहनां में प्रतिस्पर्धा उत्पन्न होने लगी है। सोयाबीन के बम्पर उत्पादन के कारण वैश्विक मूल्यों में कमी हो रही है जिस कारण सोयाबीन उत्पादक छोटे देशों को घाटा उठाना पड़ रहा है। विश्व बाजार में सोयाबीन खली एवं सोयाबीन तेल की मॉग लगातार बढ़ रही है। भारत में सोयाबीन उत्पादन के साथ–साथ इसके विपणन वृद्धि हेतु भी कई शासकीय एवं अशासकीय संस्थानें कार्यरत् हैं जिससे सोयाबीन की खेती एवं प्रसंस्करण को बढ़ावा मिल रहा है। देश में सोयाबीन का उपयोग मुख्यतः तेल निकालने में किया जाता है तथा बची हुई खली का निर्यात किया जाता है। विगत् वर्षों में सोयाबीन खली का निर्यात 4 मिलियन टन प्रतिवर्ष तक पहुँच गया है। भारत में उत्पादित सोयाबीन तेल का घरेलु

उपभोग इतना अधिक है कि उत्पादित तेल कम पड़ जाता हे तथा विदेशों से तेल आयात करना पड़ता है। बढ़ती हुई तेल की माँग की पूर्ति हेतु सोयाबीन महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है तथा इसी कारण शासन सोयाबीन के उत्पादन वृद्धि हेतु महत्वपूर्ण योजनाएँ निर्धारित कर रही है। विश्व की तुलना में भारत में उत्पादित सोयाबीन की प्रति हैक्टेयर उत्पादिता बहुत कम है जिसे बढ़ाया जाना आवश्यक है।

संदर्भ :–

1. Agriculture Statistics at a glance 2014.
2. Bapna, S.L.; Seetharaman, S.P. & Pichholiya, K.R. 1992. "Soybean System in India" Oxford & IBH Publishing Company New Delhi.
3. Bhatnagar, P.S. and Joshi, O.P. 1999. "Soybean in Cropping Systems in India." FAO Series on Integrated Crop Management, Rome, Italy.
4. Deosthali, Vrishali; Akmanchi, Anand and Salunke Chandan. 2005. "Soybean Agricuture in India, A Special Analysis" Trans.Inst.Indian Geographers Vol.27, No.-13.
5. Reddi, Vinayak, 2007. "India's Oilseed Economy". New Century Publication Books Chennai.
6. Economy of India". Oxford & IBH Pub.Co. New Delhi.
7. Shrinivasan P.V. 2005. "Impact of Trade Liberalization on India's Oilseed and Edible Oils sector" - Report of Indian Agricultural Market & Policy IGIDR Mumbai and USDA/ERS, Pg.1-35.
8. Singh, Narendra Bahadur. 2004. "Soybean Production and improvement in India". NRCS Publication Indore.
9. Singh, Guriqbal, 2010. "The Soybean: Botany, Production and Uses". CABI, Publication UK.
10. fas.usda.gov. (Website of United State of America Agriculture Department)
11. www.sopa.org (Wevsite of Soyabean Processors AssociationIndore)